10 FRI APR 2020 WK 15 • 101-265

04/04/2020
B. A. Honours

4.

'जय जय भैरवि असुर-भयाउनि'
महाकवि विद्यापति

अर्थ

"जय जय भैरवि ... अनुगत गति तुअ पाया"

शब्दार्थ :- पशुपति - पसु+पति - महादेव
भामिनि - स्त्री
अनुगत - पयकेर सेवक, अनुसरण करनिहार

राक्षसकेँ भयाक्रान्त करनिहारि महादेवक माया स्वरूपा अर्द्धाङ्गिनी भैरवी, अहाँक जय हो। हे गोसाउनि, हमरा सहज सुबुद्धिकेर वरदान दिअए जाहिसँ हम अहाँक अनुसरण, पयकेर सेवक भए सद्गति पाबि सकी।

"वासर रइनि ... उगलि कमल कुड़ा"

शब्दार्थ :- वासर - दिन, रइनि - राति, सवासन - शवपर आसन अर्थात मसानी, चन्द्रभनि - मणि समान चमकैत चन्द्रमा, चूड़ा - सीमंत

अहाँ दिन-राति शवपर विराजमान रहैत छी, अहाँक सीमंतमे चानक माङटीका चमकि रहल अछि। कतेको दानवकेँ मारि मुँहमे धरैत छी तँ कतोकोकेँ उगलि दैत छी अर्थात् शवकेर कुरा करैत छी।

APR 11 2020 WK 15 • 102-264

"सामर वरन ... उठ फोका"

शब्दार्थ :- सामर - श्यामल, पिण्डश्याम, वरन - वर्ण, नयन- आँखि
अनुरागित - क्रोधे लाल, जलद-मेघ, कोका - लाल रँगक फूल

पिण्डश्याम वर्णमे लाल-लाल आँखि लगैछ जेना कारी मेघमे लाल रँगक कोका फूल फुलायल हो। तामसे कट-कट करैत अहाँक दाँतक प्रहारसँ ओंठ-युगल पाँडूर फूल सन लाल लगैछ, ओहिसँ निकलैछ बुलबुलासँ शोनित होइछ जे सोनितक झागमे बुलबुला निकलि रहल अछि।

"घन घन घनए ~~कर-कर किङ्कर~~ ... जेनु माता"

शब्दार्थ :- घन-घन - शब्द, घनए - बाजए, करि - डाँड़
हन-हन - शब्द, काता - तरुआरि

अहाँक डाँड़मे बान्हल घुँघरुसँ घन-घन अबाज निकलि रहल अछि तँ हाथक तरुआरि वेगेँ चलैत हन-हन कए रहल अछि। अहाँक चरणक सेवक हम विद्यापति छी हे मइया, अपन एहि सन्तानकेँ कहिओ नहि बिसरब।

SUN 12

अस्तु, एहि तरहक बहुतो पदकेर माध्यमे महाकवि विद्यापति 'जन साहित्य' के निर्माण कएलनि, जकर साधनामे निहित अछि प्रसाद, लालित्य एवं माधुर्य।

By
Dr. Ajit [illegible]

Scanned by TapScanner